सत्यमेव जयते

ತುಳು ಜೋಕ್ಲೆ ಕಲ್ಪೊದಿಕೆ

ತುಳು ಬಾಲಬೋಧೆ

तुलु भाषा प्रवेशिका

TULU PRIMER

CIIL-NCERT Primer Series

ई-पाठशाला

क्यूआर (QR) कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पांस कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई-सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य-सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई-पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई-पाठशाला के माध्यम से ई-सामग्री प्राप्त करें।

1. प्ले स्टोर से ई-पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें
2. क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें
3. स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें
4. लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें
5. उपलब्ध ई-सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई-पाठशाला द्वारा ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें– https://epathshala.nic.in/topics.php पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

दीक्षा

दीक्षा एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। **दीक्षा** का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टेबलेट से ई-सामग्री प्राप्त करें।

1. अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें
2. अपनी भूमिका चुनें–शिक्षक या विद्यार्थी
3. पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें
4. क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें
5. कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें
6. क्लिक करके क्यूआर कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लेपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें– https://diksha.gov.in/resources पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

“ जैसे हमारे जीवन को हमारी मां गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं, जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है। जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं। भाषा अनेक पर भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएं एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं। एक दूसरे का विकास कर रही हैं।”

श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री, भारत

(27 फरवरी, 2022; मन की बात कार्यक्रम में)

ತುಳು ಜೋಕ್ಲೆ ಕಲ್ಪೊದಿಕೆ

ತುಳು ಬಾಲಬೋಧೆ

तुलु भाषा प्रवेशिका

TULU PRIMER

भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
Ph: 0821 2515820 (Director)
email: ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
Ph: 011 2696 2580
email: dceta.ncert@nic.in

ತುಳು ಜೋಕ್ಲೆ ಕಲ್ಪೊದಿಕೆ
ತುಳು ಬಾಲಬೋಧೆ
तुलु भाषा प्रवेशिका
TULU PRIMER

A basal reader of Tulu alphabet and basic numerals for the kids of Balvatika/Anganwadi levels and adult literacy programmes through andragogy, prepared by Central Institute of Indian Languages (CIIL), Mysuru and National Council of Educational Research and Training (NCERT), New Delhi.

Editors
Dinesh Prasad Saklani
Shailendra Mohan
Aleendra Brahma
Shwetha K

ISBN: 978-81-19411-21-4

First Edition: March 9, 2024

Published by CIIL, Mysuru in collaboration with NCERT, New Delhi.

© CIIL & NCERT 2024
All rights reserved. No part of this primer may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted into any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying and recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Cover Design: Shwetha K
Cover Photo: Yogitha Shetty & web images

Printed by CIIL, Mysuru and NCERT, New Delhi.

धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

सत्यमेव जयते

75 आज़ादी का अमृत महोत्सव

मंत्री
शिक्षा; कौशल विकास
और उद्यमशीलता
भारत सरकार
Minister
Education; Skill Development
& Entrepreneurship
Government of India

संदेश

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकसित भारत 2047 के संकल्प के मार्ग का प्रमुख अवयव भारतीय भाषाएँ हैं, जिनसे ज्ञान-विज्ञान एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुंच देश के समस्त बच्चों तक सुनिश्चित हो सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफ़ारिशों के अनुरूप ही बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण कार्य को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। अनेकानेक शोधों के माध्यम से भी यही निष्कर्ष निकाला गया है कि जब छात्रों को उनकी मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में अनुदेशन दिया जाता है तब उनका शिक्षण-अधिगम अपेक्षाकृत उत्तम होता है। इसीलिए भारत सरकार ने बाल वाटिका, आद्य साक्षरता तथा बुनियादी साक्षरता की शुरुआत की है। देश के विभिन्न भागों का दौरा करते हुए तथा वहाँ के शिक्षकों एवं बच्चों से बातचीत करते समय हमें इस बात का बोध हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं तथा मातृभाषाओं में भाषा शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों की आवश्यकता है।

अतः हमने एन.सी.ई.आर.टी तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु को देश की सभी भाषाओं तथा मातृभाषाओं में ऐसी प्रवेशिकाओं का निर्माण करने हेतु उत्प्रेरित किया जो न केवल वैज्ञानिक विधि से अक्षर-पहचान के साथ पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करें, बल्कि बच्चों को वहाँ के सांस्कृतिक पहलुओं का ज्ञान भी करवाएँ। अपनी भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान आत्मनिर्भरता तथा विकास की ओर पहला कदम होता है।

ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार स्थानीय सामग्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तैयार की गई हैं। इन प्रवेशिकाओं की मदद से बच्चे अपनी भाषाओं तथा मातृभाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों एवं वाक्य विन्यास के साथ-साथ संबंधित राज्य की राजभाषा/ओं तथा सभ्यता एवं संस्कृति का भी बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इन पहलों के माध्यम से हमारे बच्चे भारतीय ज्ञान-परम्परा की समृद्ध विरासत से भी परिचित होंगे । डिजिटल प्रारूप में ये सभी प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को पूर्णतः निःशुल्क रूप से भी उपलब्ध होंगी।

इस अवसर पर मैं समिति के सदस्यों, विशेषज्ञों और भाषा शिक्षकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इन प्रवेशिकाओं को तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों के लिए बहुत उपयोगी साबित होंगी।

(धर्मेन्द्र प्रधान)

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

स्वच्छ भारत

कौशल भारत, कुशल भारत

MOE - Room No. 301, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 001, Phone : 91-11-23782387, Fax : 91-11-23382365
MSDE - Room No. 516, 5th Floor, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110001, Phone : 91-11-23465810, Fax : 011-23465825
E-mail : minister.sm@gov.in, minister-msde@gov.in

प्राक्कथन

भाषा समाज का एक अभिन्न अंग है। भाषा संस्कृति का एक उपादान है, समुदाय की पहचान है और पीढ़ियों के लिए ज्ञान के संचरण का स्रोत भी है। भाषा सभ्यता के विकास को प्रेरित करती है और मानव को उच्चतर स्तर पर रूपांतरित करती है। यह तथ्य कि भारत एक बहुभाषिक देश है-एक ओर भारत की भाषिक विविधता को दर्शाता है तो दूसरी ओर यह भी बताता है कि कैसे यह एक सामाजिक विविधता है। साथ ही यह भी बताता है कि लगभग सभी भारतीय सही अर्थों में द्विभाषिक या बहुभाषिक हैं। हम जानते हैं कि भारत की 2011 की जनगणना में 121 भाषाओं और 270 मातृभाषाओं/बोलियों की सूची दी गई है। भारतीय संविधान के खंड XVII और 8वीं अनुसूची की 343 से 351 तक की धाराएँ देश की भाषाओं के मुद्दों पर हैं। बच्चों का सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास भाषा के द्वारा समृद्ध होता है, क्योंकि समाजीकरण का कार्य मातृभाषा अथवा परिवार एवं पड़ोस की भाषा में होता है। यह एक स्थापित बिंदु है कि बच्चों के पास भाषाओं को सीखने की जन्मजात क्षमता होती है, अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक दिनों (आधारभूत चरण) में शिक्षा हेतु माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया है।

विद्यालयों में बच्चों की मातृभाषा की उपलब्धता को सुनिश्चित करना और यह देखना कि बच्चे किसी अपरिचित भाषा में शिक्षा-प्राप्ति के भय से मुक्त हों-ये किसी भी सफल शिक्षा-व्यवस्था के शाश्वत सिद्धांत हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा खंड को '*बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति*' का शीर्षक दिया गया है जो बहुत ही सटीक है तथा यह विद्यालयी शिक्षा में सभी भाषाओं के विकास के महत्व पर बल देता है। भारत सरकार देशभर में मातृभाषा-आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है और विभिन्न पहलों एवं परियोजनाओं के माध्यम से इसे लागू करने हेतु सतत प्रयास कर रही है। बच्चों की घर की भाषा में शिक्षा की यह मज़बूत नींव न केवल भविष्य में विद्यालय एवं उच्चतर शिक्षा को सबल बनाने में सहायक होगी बल्कि इसका एक उद्देश्य यह भी है कि बच्चे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी प्रेरित हों।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) एवं भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) द्वारा संयुक्त रूप से तैयार प्रवेशिकाओं (प्राइमरों) का लक्ष्य छोटे बच्चों या अन्य भाषा सीखने वाले किसी अन्य व्यक्ति को मुद्रित एवं दृश्य माध्यम से भाषाओं से सुपरिचित बनाना है। इन प्रवेशिकाओं का विकास विलुप्ति का खतरा झेल रही अनेक भाषाओं के दस्तावेजीकरण के प्रयासों में भी अपना योगदान दे रहा है। अतः भाषाओं का संरक्षण और विकास करना तथा सभी भाषाओं को विद्यालय में लाकर विद्यालयी शिक्षा, विशेषकर इसके निर्माणात्मक वर्षों को समावेशी बनाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह भारतीय संविधान की समानाधिकारवादी लोकतंत्र की आत्मा के अनुरूप है और प्रत्येक समुदाय एवं व्यक्ति के भाषिक अधिकारों का सुदृढ़ीकरण है। मुझे विश्वास है कि ये पुस्तिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित बहुभाषिक शिक्षा की अवधारणा को प्रोत्साहन प्रदान करेंगी। साथ ही अनेक जनजातीय, अल्पसंख्यक एवं अल्पप्रयुक्त भाषाओं में अंतर्वस्तु के विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेंगी तथा एनसीईआरटी द्वारा आधारभूत चरण हेतु विकसित अन्य सामग्रियों, जैसे- बालवाटिका, विद्या प्रवेश आदि के लिए सहायक सामग्री का कार्य करेंगी। शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करने वाले शिक्षाविदों के हाथों में इन प्रवेशिकाओं को देते हुए मैं माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी का उनके प्रेरणादायक मार्गदर्शन के लिए अनुगृहीत हूँ। मैं इन प्रवेशिकाओं के सफल विकास एवं प्रकाशन हेतु गठित समिति के कार्यकारी समूहों के अध्यक्षों, सदस्यों तथा समन्वयकों को भी धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार; एनसीईआरटी एवं सीआईआईएल का यह संयुक्त प्रयास मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के उत्थान हेतु राज्यों एवं शिक्षा के अभिकरणों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाले एक राष्ट्रीय अभियान का रूप लेगा ताकि अपनी मातृभाषा का एवं अपनी मातृभाषा में अध्ययन करने के हर विद्यार्थी के अधिकार की रक्षा हो सके।

मार्च, 2024
नई दिल्ली

प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नईदिल्ली

भूमिका / Introduction

भारत सदियों से एक बहुभाषिक देश रहा है जहाँ कई भाषाएँ/मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। यह देश की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि हम अपने दैनिक व्यवहार में कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं जो हमें एक साथ बांधती हैं और एकजुट रखती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में इस बात पर अत्याधिक बल दिया गया है कि भारत की बहुभाषिक प्रकृति एक बहुत बड़ी संपत्ति है जिसका देश के सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक विकास के लिए कुशलतापूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता है। यह शिक्षा में हर स्तर पर बहुभाषावाद को बढ़ावा देने की अनुशंसा करती है ताकि विद्यार्थियों को अपनी भाषाओं में अधययन करने का अवसर प्राप्त हो सके। सभी भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम सामग्री के सृजन से इस बहुभाषिक संपदा में वृद्धि होगी और इससे विकसित भारत के निर्माण में बेहतर योगदान हो सकेगा। एनईपी 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप, प्रारंभिक कक्षा की प्रवेशिकाओं के विकास के लिए एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अनोखी भाषाई और सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप हो। इन प्रवेशिकाओं का उद्देश्य प्रारंभिक कक्षा के छात्रों को पढ़ने और लिखने में प्रवीणता प्रदान करना और उनकी रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना है। यह किसी भाषा के प्रतीकों और उसकी वर्णमाला के अक्षरों के बोध, अभिज्ञान एवं उच्चारण की कुंजी है। ये प्रवेशिकाएं बच्चों को इन अक्षरों के एक या एक से अधिक समुच्चयों के अर्थ से भी अवगत कराती हैं जो उनके संयोजनों जैसे, शब्द में उन अक्षरों की आरंभिक, माध्यमिक या अंतस्थ स्थिति से बनते हैं। इसके अतिरिक्त, ये बाद में बताए गये अक्षरों के लेखन के अभ्यास को सुगम बनाने हेतु उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और ये शिशुगीत/छंद/तुकांत बच्चों की भाषा तथा उनके संज्ञानात्मक कौशलों के विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

Bharat has been a multilingual country for ages, with many languages spoken in different regions of the country. Using multiple languages in our verbal repertoire is a common characteristic of the country; it binds us together and keeps us united. National Education Policy (NEP) 2020 strongly emphasises the idea, that the multilingual nature of Bharat is a huge asset that needs to be utilized efficiently for the socio-cultural, economic, and educational development of the nation. It recommends the promotion of multilingualism in education at every level so that learners get the opportunity to study in their own language(s). The creation of teaching-learning material in all Bharatiya languages will thus boost this multilingual asset and allow it to make a better contribution to ‘Viksit Bharat’. That said, developing early-grade primers in alignment with NEP 2020 requires a comprehensive and inclusive approach that addresses the unique linguistic and cultural characteristics of each region in India. These primers aim to provide not only language proficiency in reading and writing but also foster creativity and critical thinking among the early-stage learners. It is a key to pronouncing, recognizing, comprehending letters of the alphabet and symbols of a language. It also familiarizes children with the meaning of one or more sets of these letters made through their combinations such as letters in initial, medial and final positions of the word. Moreover, it provides examples that facilitate writing practice of the letters introduced later; and the rhymes will help students in their language development and cognitive skills.

ಭಾರತದ ವಿಭಿನ್ನ ಪ್ರದೇಶಗಳಲ್ಲಿ ಹಲವಾರು ಭಾಷೆಗಳನ್ನು ಮಾತನಾಡುವುದರಿಂದ ಭಾರತವು ಬಹುಭಾಷೆ ಮತ್ತು ಬಹುಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ದೇಶವಾಗಿದೆ. ಮೌಖಿಕವಾಗಿ ನಮ್ಮಲ್ಲಿ ಬಹುಭಾಷೆಯನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸುವ ಮತ್ತು ಆಹ್ಲಾದಿಸುವ ಪ್ರವೃತ್ತಿಯು ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿದ್ದು, ಇದು ನಮ್ಮ ದೇಶದ ಸಾಮಾನ್ಯ ಲಕ್ಷಣವಾಗಿರುವುದರ ಜೊತೆಗೆ ನಮ್ಮನ್ನು ಒಂದಾಗಿ ಬಂಧಿಸಿದೆ ಹಾಗೂ ಒಗ್ಗೂಡಿಸಿದೆ. ಭಾರತದ ಬಹುಭಾಷಾ ಸ್ವಭಾವವನ್ನು ಸಂಪತ್ತು ಮತ್ತು ಶಕ್ತಿಯೆಂದು ಪರಿಗಣಿಸಿ ಅದನ್ನು ಸಮಾಜೋ–ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ, ಆರ್ಥಿಕ ಮತ್ತು ಶೈಕ್ಷಣಿಕ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಗೆ ಪರಿಣಾಮಕಾರಿಯಾಗಿ ಉಪಯೋಗಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಅಗತ್ಯತೆಯಿದೆ ಎಂಬ ಪರಿಕಲ್ಪನೆಯನ್ನು ಹೊಸ ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಶಿಕ್ಷಣ ನೀತಿ–2020 (NEP 2020) ತೀವ್ರವಾಗಿ ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುತ್ತದೆ. ಇದು ಶಿಕ್ಷಣದ ಪ್ರತಿ ಹಂತದಲ್ಲೂ ಬಹುಭಾಷಾ ವಾದದ ಪ್ರಚಾರವನ್ನು ಶಿಫಾರಸ್ಸು ಮಾಡುತ್ತದೆ. ಇದರಿಂದ ಕಲಿಯುವವರು ತಮ್ಮ ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲಿಯೇ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಲು ಅವಕಾಶವನ್ನು ನೀಡಿದಂತಾಗುತ್ತದೆ. ಎಲ್ಲಾ ಭಾರತೀಯ ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲಿ ಬೋಧನೆ–ಕಲಿಕೆ ಸಾಮಗ್ರಿಗಳನ್ನು ರಚಿಸುವುದರಿಂದ ಈ ಬಹುಭಾಷಾ ಸಂಪತ್ತನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತದೆ ಮತ್ತು ‘ವಿಕಸಿತ ಭಾರತದ’ ದೃಷ್ಟಿಕೋನಕ್ಕೆ ಉತ್ತಮ ಕೊಡುಗೆ ನೀಡಲು ಅವಕಾಶ ಮಾಡಿಕೊಡುತ್ತದೆ. NEP

2020 ರೊಂದಿಗೆ ಪೂರ್ವ–ಹಂತದ ಮೂಲಪಾಠ ಪುಸ್ತಕಗಳನ್ನು ಅಭಿವೃದ್ಧಿಪಡಿಸಲು ಭಾರತದ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಪ್ರದೇಶದ ವಿಶಿಷ್ಟ ಭಾಷಿಕ ಮತ್ತು ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಗುಣಲಕ್ಷಣಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವ ಸಮಗ್ರ ಮತ್ತು ಅಂತರ್ಗತ ವಿಧಾನದ ಅಗತ್ಯವಿದೆ. ಈ ಮೂಲಪಾಠ ಪುಸ್ತಕಗಳು ಆರಂಭಿಕ ಹಂತದ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳಲ್ಲಿ ಓದುವಿಕೆ ಮತ್ತು ಬರವಣಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಭಾಷಾ ಪ್ರಾವೀಣ್ಯತೆ ಮತ್ತು ಸೃಜನಶೀಲತೆಗೆ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹ ಮತ್ತು ವಿಮರ್ಶಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಗಳನ್ನು ಪ್ರೇರೇಪಿಸುವ ಗುರಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿದೆ. ವರ್ಣಮಾಲೆಯ ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಗುರುತಿಸಲು, ಗ್ರಹಿಸಲು ಮತ್ತು ಉಚ್ಚರಿಸಲು ಕಲಿಕೆಯ ಕೀಲಿಯಾಗಿ ಅವು ಕಾರ್ಯನಿರ್ವಹಿಸುತ್ತವೆ. ಈ ಮೂಲಪಾಠ ಪುಸ್ತಕಗಳು ಅಕ್ಷರಗಳ ಒಂದು ಅಥವಾ ಹೆಚ್ಚು ರೂಪಾಂತರ ಮತ್ತು ಅವುಗಳ ಅರ್ಥಗಳನ್ನು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಪರಿಚಯಿಸುತ್ತವೆ, ಉದಾಹರಣೆಗೆ ಪದದ ಆದಿ, ಮಧ್ಯ ಮತ್ತು ಅಂತ್ಯದ ಸ್ಥಾನಗಳಲ್ಲಿನ ಅಕ್ಷರಗಳು. ಅಂತಿಮವಾಗಿ, ಇದು ಅಧ್ಯಾಯಗಳಲ್ಲಿ ಅಕ್ಷರ ಬರೆಯುವ ಅಭ್ಯಾಸವನ್ನು ಪರಿಚಯಿಸುತ್ತದೆ. ಪ್ರಾಸಗಳು ಮತ್ತು ಹಾಡುಗಳು ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿನ ಭಾಷಾ ಬೆಳವಣಿಗೆ, ಅರಿವಿನ ಕೌಶಲಗಳು ಮತ್ತು ಸ್ಮರಣೆಯನ್ನು ಅಭಿವೃದ್ಧಿಪಡಿಸಲು ಸಹಾಯ ಮಾಡುತ್ತವೆ.

मार्च, 2024
मैसूरु

प्रो. शैलेंद्र मोहन
निदेशक
भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु

CIIL-NCERT Primer Series: Tulu Primer Development Team

Guidance

Dinesh Prasad Saklani, Director, NCERT, New Delhi
Shailendra Mohan, Director, CIIL, Mysuru
Chamu Krishna Shastry, Chairman, Bharatiya Bhasha Samiti (BBS), New Delhi

Advisors

Amarendra P. Behera, Joint Director, Central Institute of Educational Technology, NCERT, New Delhi
Ramanujam Meganathan, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Awadesh Kumar Mishra, Chief Coordinator (Academic), BBS, New Delhi
Sandhya Singh, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Mohd. Faruq Ansari, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Pankaj Dwivedi, Assistant Director (Admin) i/c, CIIL, Mysuru

Coordinator

Aleendra Brahma, Lecturer-cum-Junior Research Officer, CIIL, Mysuru

Resource Persons

Sayeegeetha, Assistant Professor, Department of Humanities, NITTE (Deemed to be University), Mangalore
Yogitha Shetty, Assistant Professor, Government First Grade College, Saragur, Mysuru
Katyayini Kunjibettu, Lecturer, Mahatma Gandhi Memorial College, Udupi
Kanaradi Vadiraja Bhat, Retd. Principal, Shri Sharada College, Basrur

Kannada Reviewer

Nagaraju S, Senior Resource Person, Scheme for Protection and Preservation of Endangered Languages (SPPEL), CIIL, Mysuru

Design Team

Nandakumar L, JRP (Technical), National Translation Mission, CIIL, Mysuru
Saravanan A S, Graphic Editor, SPPEL, CIIL, Mysuru
Shwetha K, Artist, Bharatavani, CIIL, Mysuru
Puttaraju K, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
Shobharani B, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
G. Yuvaraj, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

We sincerely acknowledge the copyright holders of the pictures used in this primer, anonymously and we also declare that the pictures are used for purely educational purposes only.

ತುಳು ಬಾಲಬೋಧೆಯನ್ನು ಬಳಸುವ ಬಗೆ

ಮಾತೃಭಾಷೆಯಿಂದ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ಅನೇಕ ಭಾಷೆಗಳೊಂದಿಗೆ ಮಗುವಿನ ಪರಿಚಿತತೆ ಅದರ ಸರ್ವಾಂಗೀಣ ಬೆಳವಣಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಬೀರುವ ಅತ್ಯಂತ ನಿರ್ಣಾಯಕ ಅಂಶಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. ವಿವಿಧ ಭಾಷೆಗಳ ಆರಂಭಿಕ ಪರಿಚಯವು ಮಗುವಿನ ಅರಿವಿನ ಸಾಮರ್ಥ್ಯಗಳ ವಿಸ್ತರಣೆಗೆ ಸಹಾಯ ಮಾಡುತ್ತದೆ. ಹಾಗೆಯೇ ಮಕ್ಕಳ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಮತ್ತು ಸಮಗ್ರ ಸಾಮರ್ಥ್ಯಗಳನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವಲ್ಲಿ ಮಾತೃಭಾಷೆ ಪ್ರಮುಖ ಪಾತ್ರವನ್ನು ವಹಿಸುತ್ತದೆ. ಸ್ಥಳೀಯ ಭಾಷೆ ಎಂದೂ ಕರೆಯಲ್ಪಡುವ ಮಾತೃಭಾಷೆಯು, ಮಕ್ಕಳು ತಮ್ಮ ಭಾವನೆಗಳು ಮತ್ತು ಆಲೋಚನೆಗಳನ್ನು ಹೆಚ್ಚು ಆತ್ಮವಿಶ್ವಾಸದಿಂದ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಲು, ಅವರ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಜಗತ್ತನ್ನು ಉತ್ತಮವಾಗಿ ಅರ್ಥಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲು ಮತ್ತು ಭವಿಷ್ಯದಲ್ಲಿ ಅವರ ಸಾಮರ್ಥ್ಯಗಳನ್ನು ಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಅರಿತುಕೊಳ್ಳಲು ಸಹಾಯ ಮಾಡುತ್ತದೆ. ಅಂತೆಯೇ, ಶಿಶುವಿಹಾರ ಮತ್ತು ಅಂಗನವಾಡಿಗಳಂತಹ ಕಲಿಕೆಯ ಹೊಸ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿ ಮನೆಯ ಪರಿಚಿತ ಸ್ಥಳದ ವಿಸ್ತರಣೆಯು ಮಕ್ಕಳ ಕಲಿಕೆಯ ಉತ್ಸಾಹ ಮತ್ತು ಅನ್ವೇಷಣಾ ಮನಸ್ಸನ್ನು ಉಳಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಸಹಾಯಕವಾಗುತ್ತದೆ. ಮಾತೃಭಾಷೆ-ಆಧರಿತ ಬಹುಭಾಷಾ ಶಿಕ್ಷಣದ ಪ್ರತಿಪಾದಕರಲ್ಲಿ ಪ್ರಮುಖವಾಗಿರುವ ಯುನೆಸ್ಕೋ (UNESCO), ಮಕ್ಕಳ ಬೋಧನಾ ಭಾಷೆ ಅವರದೇ ಸ್ವಂತ ಮಾತೃಭಾಷೆಯಾಗಿದ್ದಾಗ ತಿಳಿವಳಿಕೆಯಿಂದ ಓದುವ ಸಾಧ್ಯತೆ 30% ಹೆಚ್ಚಾಗಿರುತ್ತದೆ ಎಂದು ಪ್ರಾಯೋಗಿಕ ಪುರಾವೆಗಳ ಮೂಲಕ ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಿದೆ. ಮಾತೃಭಾಷೆಯಲ್ಲಿನ ಆರಂಭಿಕ ಶಿಕ್ಷಣವು ಕಲಿಕೆಯ ಗುಣಮಟ್ಟವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತದೆ ಮತ್ತು ಆ ಮೂಲಕ, ನಂತರದ ಉನ್ನತ ಶಿಕ್ಷಣದ ಸವಾಲುಗಳಿಗೆ ದೃಢವಾದ ಅಡಿಪಾಯವನ್ನು ಹಾಕುತ್ತದೆ. ಮಾತೃಭಾಷಾ ಆಧಾರಿತ ಶಿಕ್ಷಣದ ಅಗತ್ಯತೆಯು ಈಗಾಗಲೇ ಸಾಬೀತಾಗಿರುವ ವಿಷಯವಾಗಿದ್ದು, ಭಾರತ ಸರ್ಕಾರದ ಪ್ರಯತ್ನಗಳು ಕೂಡಾ ಸ್ವಂತ ಮಾತೃಭಾಷೆಗಳ ಮೂಲಕ ಮಕ್ಕಳ ಆರಂಭಿಕ ಕಲಿಕೆಯನ್ನು ಬಲಪಡಿಸುವ ಗುರಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿವೆ.

ಮಾತೃಭಾಷಾ ಆಧಾರಿತ ಶಿಕ್ಷಣದ ಅಗತ್ಯತೆಯನ್ನು ಒತ್ತಿ ಹೇಳುವ 2020ರ ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಶಿಕ್ಷಣ ನೀತಿ ಮತ್ತು 2022ರ ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಪಠ್ಯಕ್ರಮ ಚೌಕಟ್ಟು ಸಹ ಭಾರತದ ವಿವಿಧ ಮಾತೃಭಾಷೆಗಳ ಮೂಲಕ ಆರಂಭಿಕ ಕಲಿಕೆಗೆ ಪ್ರೇರೇಪಣೆಯನ್ನು ನೀಡಿದೆ. ಎಂಟು ವರ್ಷದ ವರೆಗಿನ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಪ್ರಾಥಮಿಕ ಬೋಧನಾ ಮಾಧ್ಯಮವಾಗಿ ಮಾತೃಭಾಷೆಗೆ ಹೆಚ್ಚಿನ ಒತ್ತು ನೀಡಲಾಗಿದೆ ಮತ್ತು ಇದರ ಭಾಗವಾಗಿ, ಮೂರರಿಂದ ಐದು ವರ್ಷದೊಳಗಿನ ಮಕ್ಕಳಿಗಾಗಿ ಭಾರತದ ವಿವಿಧ ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲಿ ಬಾಲವಾಟಿಕಾ ಪುಸ್ತಕಗಳನ್ನು ರಚಿಸುವ ಕ್ರಮವನ್ನು ಕೈಗೊಳ್ಳಲಾಗಿದೆ. ಮನೆಯ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ವಾತಾವರಣವನ್ನು ಪ್ರೈಮರ್‌ಗಳು ಮತ್ತು ಪಠ್ಯಪುಸ್ತಕಗಳಂತಹ ಕಲಿಕೆಯ ಸಾಧನಗಳಿಗೆ ವಿಸ್ತರಿಸುವುದರಿಂದ ಮಕ್ಕಳ ಕಲಿಕೆಯ ಉತ್ಸಾಹವನ್ನು ಉಳಿಸಿಕೊಳ್ಳಬಹುದಾಗಿದ್ದು, ಇದೇ ಉದ್ದೇಶವನ್ನು ಈ ಬಾಲವಾಟಿಕಾ ಕೈಪಿಡಿಗಳ ಸರಣಿಯೂ ಹೊಂದಿದೆ. ವರ್ಣರಂಜಿತ ಚಿತ್ರಗಳು ಮತ್ತು ಲಯಬದ್ಧ ಹಾಡುಗಳನ್ನು ಸೇರಿಸುವ ಮೂಲಕ ಮಕ್ಕಳ ಸೃಜನಶೀಲ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ಮತ್ತು ಸಂತೋಷವನ್ನು ಈ ಪ್ರೈಮರ್‌ಗಳು ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತವೆ ಮತ್ತು ಅದರ ಓದುವಿಕೆ ಮತ್ತು ಬರವಣಿಗೆಯ ಅಭ್ಯಾಸಗಳಿಂದ ಉತ್ತಮಗೊಳಿಸುತ್ತವೆ.

'ತುಳು' ದಕ್ಷಿಣ ಭಾರತದ ಪ್ರಮುಖ ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದಾಗಿದೆ, ಇದನ್ನು ಹತ್ತೊಂಬತ್ತನೆಯ ಶತಮಾನದ ವ್ಯಾಕರಣತಜ್ಞ ರಾಬರ್ಟ್ ಕಾಲ್ಡ್‌ವೆಲ್ "ತುಳು ಹೆಚ್ಚು ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಹೊಂದಿದ ಭಾಷೆ" ಎಂದು ಗುರುತಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಸುಮಾರು 1.9 ಮಿಲಿಯನ್ ಜನರು ಕರಾವಳಿ ಕರ್ನಾಟಕದ ಎರಡು ಜಿಲ್ಲೆಗಳಾದ ದಕ್ಷಿಣ ಕನ್ನಡ ಮತ್ತು ಉಡುಪಿ ಅಲ್ಲದೆ ಕೇರಳದ ಕಾಸರಗೋಡು ಜಿಲ್ಲೆಯಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಕೇಂದ್ರೀಕೃತವಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಗಣನೀಯ ಸಂಖ್ಯೆಯ ತುಳು ಭಾಷಿಕರು ಹಲವು ರಾಷ್ಟ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಹಂಚಿಹೋಗಿರುವುದರಿಂದಾಗಿ ಅಧಿಕೃತ ಜನಗಣತಿಗೆ ತುಳು ಮಾತನಾಡುವವರ ನಿಖರವಾದ ಸಂಖ್ಯೆಯನ್ನು ಗ್ರಹಿಸುವುದು ಕಷ್ಟಕರವಾಗಿದೆ. ಆದಾಗ್ಯೂ, ಕರ್ನಾಟಕ ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿ ಕನ್ನಡವು ಪ್ರಮುಖ ಬೋಧನಾ ಮಾಧ್ಯಮವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಕಲಿಕೆಯ ಆರಂಭಿಕ ಹಂತಗಳಲ್ಲಿ ತುಳುವನ್ನು ಅಳವಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಲಾಗಿಲ್ಲ. ಮಾತೃಭಾಷಾ ಶಿಕ್ಷಣಕ್ಕೆ ಹೆಚ್ಚಿನ ಒತ್ತು ನೀಡುವುದು ಮತ್ತು ತುಳುವಿನಂತಹ ಅಲಿಖಿತ ಭಾಷೆಗಳತ್ತ ಗಮನ ಹರಿಸುವುದು ಒಂದು ಪ್ರಮುಖ ಹೆಜ್ಜೆಯಾಗಿದ್ದು, 'ತುಳು ಬಾಲಬೋಧೆ'ಯ ರಚನೆಯು ಬೋಧನಾ ವಾತಾವರಣವನ್ನು ಪ್ರಜಾಪ್ರಭುತ್ವಗೊಳಿಸುವ ನಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಮಹತ್ವವಾದ ಪಾತ್ರವನ್ನು ವಹಿಸುತ್ತದೆ.

'ತುಳು ಬಾಲಬೋಧೆ' ಒಂದು ಚಿತ್ರಾತ್ಮಕ ಪುಸ್ತಕವಾಗಿದ್ದು, ಶಿಕ್ಷಕರು ಮತ್ತು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಕ್ರಮವಾಗಿ ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಕಲಿಸಲು ಮತ್ತು ಕಲಿಯಲು ಸಹಾಯ ಮಾಡುವ ಗುರಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿದೆ. ಹತ್ತೊಂಬತ್ತನೆಯ ಶತಮಾನದಿಂದಲೂ ತುಳು ಭಾಷೆಯನ್ನು ಬರೆಯಲು ಕನ್ನಡ ಲಿಪಿಯನ್ನು ಬಳಸುತ್ತಿರುವುದರಿಂದ, ಈ ಪ್ರೈಮರ್‌ನಲ್ಲಿಯೂ ಅದನ್ನೇ ಬಳಸಲಾಗಿದೆ. ನಾಲ್ಕು ತುಳು ಪದಗಳ ಮೂಲಕ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ತುಳುವಿನ ಶಬ್ದಗಳನ್ನು ಪರಿಚಯಿಸಲಾಗಿದೆ ಮತ್ತು ಈ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಶಬ್ದಗಳಿಗೆ ಪ್ರಾಸದ ಶಿಶುಗೀತೆಯೊಂದನ್ನು ನೀಡಲಾಗಿದೆ. ಮಕ್ಕಳ ಸೃಜನಶೀಲ ಆಸಕ್ತಿಗಳನ್ನು ಪರಿಚಯಿಸಲು ಮತ್ತು ಉಳಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಎಲ್ಲಾ ನಾಲ್ಕು ಪದಗಳನ್ನು ಚಿತ್ರಗಳಿಂದ ಪ್ರತಿನಿಧಿಸಲಾಗಿದೆ.

ಧ್ವನಿ ಪರಿಚಯ: ಮಕ್ಕಳು ಚಿತ್ರವನ್ನು ನೋಡಿ ವಸ್ತುವಿನ ಹೆಸರನ್ನು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ಆ ವಸ್ತುವಿನ ಹೆಸರು ಯಾವ ಧ್ವನಿಯಿಂದ ಆರಂಭವಾಗುತ್ತದೆಂದು ಶಿಕ್ಷಕರು ಪ್ರಶ್ನಿಸುತ್ತಾರೆ. ಉದಾಹರಣೆಗೆ: 'ಅರಿ' ಎಂಬ ಪದದಲ್ಲಿ 'ಅ' ಎಂಬ ಆರಂಭಿಕ ಧ್ವನಿಯನ್ನು ಮಕ್ಕಳು ಗುರುತಿಸುತ್ತಾರೆ.

ಅಕ್ಷರ ಪರಿಚಯ: ಶಿಕ್ಷಕರು ಮೊದಲು 'ಅ' ಎಂಬ ಅಕ್ಷರ ಹೇಗಿರುತ್ತದೆಂದು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ಕೆಲವು ಪದಗಳನ್ನು ಕೊಟ್ಟು, ಅವುಗಳಲ್ಲಿ 'ಅ' ಎಂಬ ಅಕ್ಷರವನ್ನು ಗುರುತಿಸಲು ಹೇಳಲಾಗುತ್ತದೆ. ಮಕ್ಕಳು ಮೂರು ಅಥವಾ ನಾಲ್ಕು ಶಬ್ದಗಳಲ್ಲಿ 'ಅ' ಅಕ್ಷರದ ಧ್ವನಿಯನ್ನು ಗುರುತಿಸಿ, ಅದರ ಧ್ವನಿಯನ್ನು ಉಚ್ಚರಿಸಲು ಅಭ್ಯಾಸ ಮಾಡುತ್ತಾರೆ.

ಓದುವಿಕೆ: ಮಕ್ಕಳು ಚಿತ್ರವನ್ನು ನೋಡುತ್ತಾ ಅವರ ಭಾಷೆಯಲ್ಲಿ ಶಬ್ದಗಳನ್ನು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ಅಕ್ಷರಗಳ ಮೇಲೆ ಬೆರಳುಗಳನ್ನಿಟ್ಟು, ಧ್ವನಿಗಳನ್ನು ಗುರುತಿಸುತ್ತಾ, ಎಡದಿಂದ ಬಲಕ್ಕೆ ಶಬ್ದವನ್ನು ಓದುತ್ತಾರೆ. 'ಅ' ಅಕ್ಷರವಿರುವ ಇತರ ಶಬ್ದಗಳನ್ನು ಓದುತ್ತಾ, 'ಅ' ಧ್ವನಿಯನ್ನು ಹಾಗೂ ಅಕ್ಷರವನ್ನು ಗುರುತಿಸುತ್ತಾ, ಆರಂಭದಲ್ಲಿ, ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಹಾಗೂ ಕಡೆಯಲ್ಲಿ 'ಅ' ಧ್ವನಿ ಇರುವ ಅಕ್ಷರವನ್ನು ಗುರುತಿಸುವುದನ್ನು ಶಿಕ್ಷಕರು ಅವರಿಗೆ ಹೇಳಿಕೊಡುತ್ತಾರೆ.

ಶಿಕ್ಷಕರು 'ಅ' ಅಕ್ಷರವಿರುವ ಮೂರು–ನಾಲ್ಕು ಶಬ್ದಗಳನ್ನು ಕರಿಹಲಗೆಯ ಮೇಲೆ ಬರೆಯುವಾಗ ಮಕ್ಕಳು ಅಲ್ಲಿರುವ 'ಅ' ಅಕ್ಷರವನ್ನು ಓದುತ್ತಾರೆ. ಶಿಕ್ಷಕರು ಒಬ್ಬರ ಬಳಿಕ ಒಬ್ಬರಂತೆ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಕರೆಯುತ್ತಾರೆ. ಈ ಎಲ್ಲಾ ಪದಗಳನ್ನು ಮಕ್ಕಳ ಪ್ರಪಂಚದಿಂದ ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಅವರು ಅದನ್ನು ಗುರುತಿಸುವಂತೆ ಮಾಡಲಾಗಿದೆ. ಮಕ್ಕಳು ಚಿತ್ರಗಳನ್ನು ನೋಡಿ ಹಾಗೂ ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಗುರುತಿಸಿ, ಈ ಪದಗಳನ್ನು ಪುಸ್ತಕದಲ್ಲಿ ಓದುತ್ತಾರೆ. ಶಿಕ್ಷಕರು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಒಂದೊಂದೇ ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿ ಗುರುತಿಸಲು ತಿಳಿಸುತ್ತಾರೆ. ಒಂದು ಮಗು ಅದನ್ನು ಓದುತ್ತಿರುವಾಗ ಉಳಿದ ಮಕ್ಕಳು ಅದನ್ನು ಜೊತೆಗೆ ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ಇದನ್ನು ಗುಂಪು ಓದುವಿಕೆ ಎನ್ನುತ್ತಾರೆ.

ಬರವಣಿಗೆ: ಶಿಕ್ಷಕರು ಅಕ್ಷರವನ್ನು ಬರೆಯುವಾಗ ಲೇಖನಿ ಯಾವ ಕಡೆಯಿಂದ ಯಾವ ಕಡೆಯವರೆಗೆ ಚಲಿಸುತ್ತದೆ ಎಂಬುದನ್ನು ತೋರಿಸಿಕೊಡುತ್ತಾರೆ. ಆ ಬಳಿಕ ಮಕ್ಕಳು ಪುಸ್ತಕದಲ್ಲಿ ನೀಡಲಾದ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ಅವರಷ್ಟಕ್ಕೆ ಅವರೇ ಅದನ್ನು ಬರೆಯುವಾಗ ಹಾಗೂ ಓದುವಾಗ ಶಿಕ್ಷಕರು ಸಹಾಯ ಮಾಡುತ್ತಾರೆ. ಮಕ್ಕಳ ಭಾಷೆಯ ಬೆಳವಣಿಗೆಗೆ ಎರಡು–ಮೂರು ಸಾಲಿನ ಪುಟ್ಟ ಪುಟ್ಟ ಪದ್ಯಗಳನ್ನು ಶಬ್ದಗಳೊಂದಿಗೆ ನೀಡಲಾಗಿದೆ. ಶಿಕ್ಷಕರು ಅದನ್ನು ಹಾಡುತ್ತಾ, ಓದುತ್ತಾ ಅಭ್ಯಾಸ ಮಾಡಿಸುತ್ತಾರೆ. ಅವರು ಶಾಲೆಯ ಗ್ರಂಥಾಲಯದಲ್ಲಿರುವ ಕಥೆ ಪುಸ್ತಕಗಳನ್ನು ಓದಿ ಆ ಕಥೆಯನ್ನು ಕುರಿತು ಮಕ್ಕಳೊಂದಿಗೆ ಚರ್ಚಿಸುತ್ತಾರೆ. ನಾವು ಮೊದಲು ಕಥೆಗಳನ್ನು ಹೇಳಿ ನಂತರ ಹಾಡುಗಳನ್ನು ಹಾಡಿ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಮುಂದಿನ ಹಂತಕ್ಕೆ ತಯಾರು ಮಾಡಬೇಕು. ಪುಸ್ತಕದಲ್ಲಿ ನೀಡಲಾಗಿರುವ ಪದಗಳೆಲ್ಲವೂ ಅಕ್ಷರ ಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಮಾದರಿಯಷ್ಟೇ. ಮಕ್ಕಳು ಇದಕ್ಕಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚು ಪದಗಳನ್ನು ತಿಳಿದಿರುತ್ತಾರೆ. ಶಿಕ್ಷಕರು ಆ ಪದಗಳನ್ನು ಕೂಡ ಹೇಳಿಸುವುದರ ಮೂಲಕ ಮಕ್ಕಳ ಅರಿವನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸಬಹುದು (ಉದಾಹರಣೆಗೆ 'ಅ' ಅಕ್ಷರದಿಂದ ಆರಂಭವಾಗುವ ಕೆಲವು ಪದಗಳನ್ನು ಹೇಳಿ).

ತುಳು ಭಾಷೆಯ ಹಾಡುಗಳು/ಪದಗಳು/ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಮಕ್ಕಳ ಕಲಿಕೆಯ ಅನುಕೂಲಕ್ಕಾಗಿ ಕನ್ನಡ ಲಿಪಿಯಲ್ಲಿ ನೀಡಲಾಗಿದೆ. ಕನ್ನಡ ಪದಗಳನ್ನು ಬರೆಯುವಂತೆಯೇ ಅನುನಾಸಿಕವಿರುವಲ್ಲಿ ಅನುಸ್ವಾರಗಳನ್ನು ಬಳಸಲಾಗಿದೆ. ಒಂದೆರಡು ಕಡೆ ಗುರುತು ಉಳಿಯಲೆಂದು ಅನುನಾಸಿಕ ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಬಳಿಕ ಕನ್ನಡ ಬರವಣಿಗೆಯ ರೀತಿಯನ್ನೂ ಚೌಕ ಆವರಣದಲ್ಲಿ ನೀಡಲಾಗಿದೆ. ತುಳು ಭಾಷೆಯ ವಿಶೇಷ **'ಎ್'**ಕಾರ ಹಾಗೂ **'ಉ್'**ಕಾರಗಳನ್ನು ಈ ಹಿಂದೆ ಪ್ರಕಟಗೊಂಡಿರುವ ತುಳು ನಿಘಂಟು ಹಾಗೂ ತುಳು ವ್ಯಾಕರಣಗಳಲ್ಲಿರುವಂತೆಯೇ ಬಳಸಲಾಗಿದೆಯಲ್ಲದೆ, ಅವುಗಳ ದೀರ್ಘಾಕ್ಷರಗಳನ್ನೂ ಕೊಡಲಾಗಿದ್ದು, ಇವುಗಳ ಉಚ್ಚಾರಕ್ರಮವನ್ನು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ತಿಳಿಸಿಕೊಡಬೇಕು. ಇದರಿಂದ ಪದಗಳ ಉಚ್ಚಾರಣೆಯ ರೀತಿ ಅವರಿಗೆ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗುತ್ತದೆ.

ತಿರ್ತ್ ಉಪ್ಪುನ ಗೆರೆಕ್ಲೆನ್ ತೂದು ಕೊರ್ತಿನ ಜಾಗೆಡ್ ಬರೆಲೆ.

ಸರ್ತ ಗೆರ್ :

ಅಡ್ಡ ಗೆರ್ :

ಒರ್ದ ಗೆರ್ 1 :

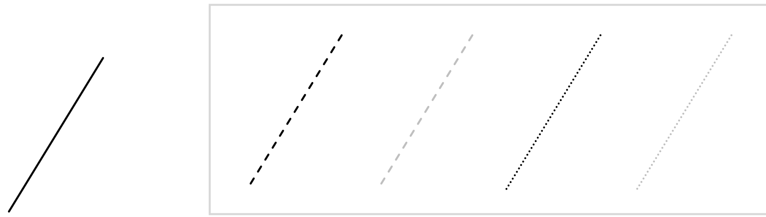

ಒರ್ದ ಗೆರ್ 2 :

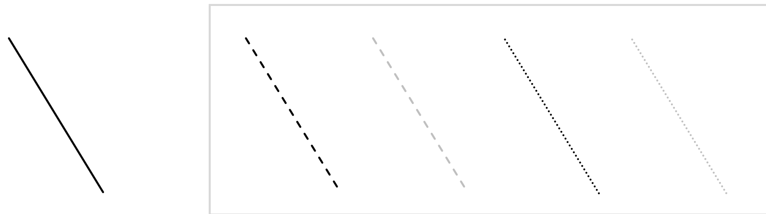

ಒಡ್ಡಿ ಗೆರ್ 1 :

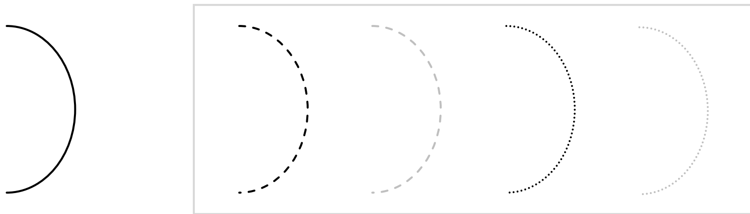

ಒಡ್ಡಿ ಗೆರ್ 2 :

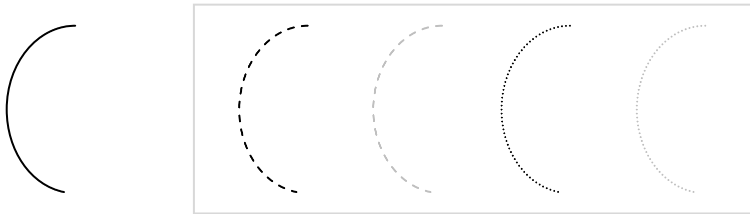

ಟಿಪ್ಪಣಿ : ಕಲ್ಪಾವುನಾರ್ ಪೆನ್ಸಿಲ್‌ನ್ ಪತೊಂದು ಕೊರ್ತಿನ ಜಾಗೆಡ್ ಗೆರೆಕುಲೆನ್ ಬರೆಪುನೆನ್ ಕಲ್ಪಾವೆರ್.

ಉಸುಲು (ಸ್ವರ) ಬರವುಲು					
	ಅ	ಆ	ಇ	ಈ	
ಉ	ಊ	ಉಇ	ಉ್	ಊ್	ಋ
ಎ	ಏ	ಐ	ಎಇ	ಎ್	ಏ್
ಒ	ಓ	ಒಇ	ಔ	ಅಂ	ಅಃ

ಅಜತ್ತಿಉಡಲ್ ಬರವುಲು (ವರ್ಗೀಯ ವ್ಯಂಜನ)				
ಕ	ಖ	ಗ	ಘ	ಙ
ಚ	ಛ	ಜ	ಝ	ಞ
ಟ	ಠ	ಡ	ಢ	ಣ
ತ	ಥ	ದ	ಧ	ನ
ಪ	ಫ	ಬ	ಭ	ಮ

ಅಜಪಂದಿ ಉಡಲ್ ಬರವುಲು (ಅವರ್ಗೀಯ ವ್ಯಂಜನ)				
ಯ	ರ	ಲ	ವ	ಶ
ಷ	ಸ	ಹ	ಳ	

ಅ

ಅಜ್ಜಬಿರು

ಕಾಮನಬಿಲ್ಲು

ಏಲ್ ಬಣ್ಣ ಸಾಲ್ ಬಣ್ಣ
ತೋಜಿ ಬರು ಅಜ್ಜಬಿರು

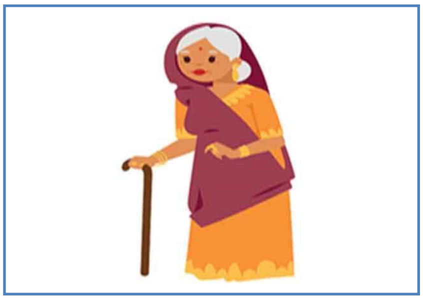

ಅಜ್ಜಿ	ಅಜ್ಜಿ	ಅಡ್ಪಿಲ್	ಅಡುಗೆ ಮನೆ	ಅರಿ	ಅಕ್ಕಿ

ಅ ಅ ಅ

ಆ

ಆಟ

ಯಕ್ಷಗಾನ

ಆಟ ತೂಯೆ್ರ್ ಪ್ರೊಲ್ರ್
ನಿದ್ರೆ್ ಬುಡು್ಂಡ ಮಲ್ರ್

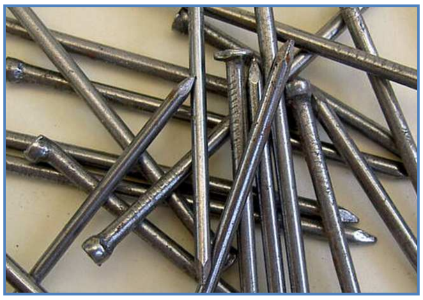

ಆನ್	ಆನೆ	ಆಣಿ	ಮೊಳೆ	ಆಣ್	ಹುಡುಗ

ಆ ಆ ಆ

ಇ

ಇಲ್ಲ್

ಮನೆ

ಮಲ್ಲ ಮಲ್ಲ ಕಲ್ಲ್ ದೀದ್
ಇಲ್ಲ್‌ನೊಂಜಿ ಕಟ್ಟ್‌ಗ
ಇಟ್ಟಿಗೆನ್ ಅಟ್ಟಿ ದೀದ್
ಅಗರ್ ಗಟ್ಟಿ ಮಲ್ಪುಗ

ಇಡ್ಲಿ	ಇಡ್ಲಿ	ಇರ್	ಎಲೆ	ಇಟ್ಟಿಗ್	ಇಟ್ಟಿಗೆ

ಇ ಇ ಇ

ಈ

ಈರಡ್ಯೆ

ಈರಡ್ಯೆತಿಂಡಿ

ಅಡ್ಯೆ ತಿನ್‌ರ್ ಬಾರಿ ರುಚಿ
ಬೋಡಾ ಇರೆಗ್ ಈರಡ್ಯೆ
ಅಡ್ಯೆ ತಿನ್‌ರ್ ಬಾರಿ ರುಚಿ
ಬೋಡಾ ಇರೆಗ್ ಪೇರಡ್ಯೆ

ಈರೋಲ್	ತಾಳೆಕಾಯಿ	ಈಟಿ	ಈಟಿ	ಈಂದ್	ಬೈನೆಮರ

ಈ ಈ ಈ

ಉ

ಉಚ್ಚು

ಹಾವು

ಉಚ್ಚುದ ಪೊರ್ಲುಗು
ಮರ್ಲ್‌ಡ ಬಾಲ್
ಜಿಡ್ ಅರ್ಲ್ದಾದ್
ತುಚ್ಚುಂಡು ಉಚ್ಚು

ಉಂಗಿಲ	ಉಂಗುರ	ಉಜ್ಜಲ್	ಉಯ್ಯಾಲೆ	ಉಜ್ಜೆರ್	ಒನಕೆ

ಉ ಉ ಉ

ಊ

ಊರಸ್

ಸೀರಣಿಗೆ

ಸೀರ್ ತರೆಟ್ ಜಿಂಜಿಂಡ್
ಊರೊರ್ಬಡಿ ಪೇನ್
ಕಣಲ ಬಾಲ್ ಊರಸ್
ಸೀರ್‌ನೊರ ಊರುವ್

ಊದ್ಬತ್ತಿ	ಅಗರಬತ್ತಿ	ತೂ	ಬೆಂಕಿ	ನೂಲು	ದಾರ

ಊ ಊ ಊ

ಉಇ

ಸುಇ

ಗರಿ

ಕಕ್ಕ್ ತೂಲೆ ಕೊಕ್ಕ ತೂಲೆ
ಮೆಇ ನಿಲಿಕ್ ಸುಇ
ಕಪ್ಪು ನೀಲೆ ಒಪ್ಪ ಬೊಲ್ಲೆ
ಥೈ ತಕ ಥೈ

ಸುಇಂಪು	ಸೀನು	ಪುಇಂತೆಲ್	ಒಂದು ತುಳು ತಿಂಗಳು

ಉಇ ಉಇ ಉಇ

ಉ್

ಕಣ್ಣ್

ಕಣ್ಣು

ಪಿಳಿಪಿಳಿ ಕಣ್ಣ್ದ
ಪ್ರೋಕ್ರಿ ಬಾಲ್
ನಡಪುಂಡು ಪಿಟಿ ಪಿಟಿ
ಮಲ್ತೊಂದು ಸೇಲ್

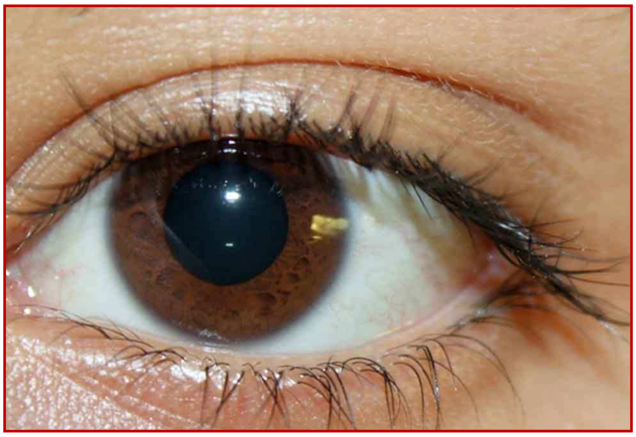

ಕಾಡ್	ಕಾಡು	ಪೇರ್	ಹಾಲು	ಬಾರ್	ಭತ್ತ

ಊ

ಬಲೂತ್ಬಲೂತ್

ಓಡಿಓಡಿ

ದಮ್ಮು ಕಟ್ಟ್‌ದ್ ಬಲ್ತ್
ಈ ಕಾಂಡ್
ಬಲೂತ್ಬಲೂತ್‌ದ್
ಸಾಕಾಂಡ್

ಊ ಊ ಊ

ಊ ಊ ಊ

ಋ

ಋಷಿ

ಋಷಿ

ಭಾರತ ದೇಶೊಡು ಋಷಿಕುಲು ಪಾಕ
ಸಾರತ್ತ ರೂಪೊಡು ತೆರಿಯೊಂದು ತೂಕ

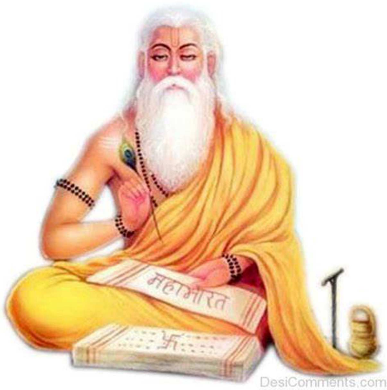

ಋ ಋ ಋ

ಋ ಋ ಋ

ಎ

ಎಲು

ಎಲುಬು

ನಾಯಿ ಬತ್ತ್‌ಂಡ್
ಎಲು ಅಗ್ಗಿಂಡ್
ಬೀಲ ದೆರ್ತ್‌ದ್
ಲಾಗ ಪಾಡ್‌ಂಡ್

ಎಲಿ	ಇಲಿ	ಎರು	ಕೋಣ	ಎಟ್ಟಿ	ಸೀಗಡಿ

ಎ ಎ ಎ

ಏ

ಏಡ್

ಆಡು

ಏಡ್‌ದ ಕುಟ್ಟಿ
ಓಡೆಗ್ ಪೋಪ?
ಇಡೆಗ್ ಬಲ
ನಮ ಗೊಬ್ಬುಗಾ

ಏಮ್	ಆಮೆ	ಏರಿ	ಏರಿ ಮೀನು	ಏಲಕ್ಕಿ	ಏಲಕ್ಕಿ

ಏ ಏ ಏ

ಐ

ಐನ್

ಐದು

ಮೈರ್‌ದ ಮೆಇಟ್
ಪೊರ್ಲುದ ಸುಇ
ಸುಇತ ಕಣ್ಣ್‌ಡ್
ರೈಸುಂಡು ಮೆಇ

5

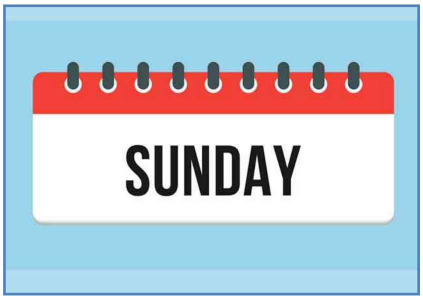

ಐತಾರ	ಭಾನುವಾರ	ಐತ	ಸಿಂಗಾರ	ಮೈರ್	ನವಿಲು

ಐ ಐ ಐ

ಎಇ

ಕೆಇ

ಭತ್ತದ ಬೆಳೆ

ಸೆಇ ಎಡ್ಡ್ ಜೂವ್ರೊಗು
ಮೈ ಎಡ್ಡ್ ಕಣ್ಣ್‌ಗ್

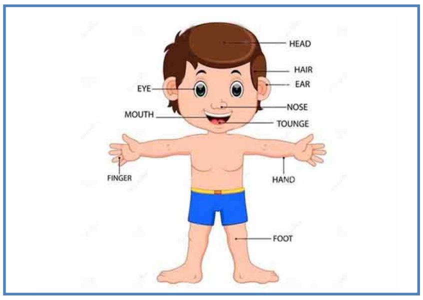

ಮೆಇ	ದೇಹ	ಸೆಇ	ತುಪ್ಪ	ಗೆಇಮ್	ಕೆಲಸ

ಎಇ ಎಇ ಎಇ

ಪ್

ಕಪ್ಪ್

ಕಪ್ಪೆ

ಪಲ್ಲಡ್ ಒಂಜಿ ಗೋಂಕುರು ಕಪ್ಪ್
ಟರ ಟರ ಟರ ಟರ
ಕಪ್ಪ್‌ದ ಬಾಯಿಡ್ ಇರಿಂಟಿ ಪಾಂತ್
ಟಿರಿ ಟಿರಿ ಟಿರಿ ಟಿರಿ

ಅಪ್ಪ್	ಅಮ್ಮ	ತುಪ್ಪ್	ಕಣಜ	ಕಬ್	ಕವಲು

ಪ್	ಪ್	ಪ್	

ಬ್

ಬ್ೕಂಡ್‌ವಾದ್ಯ

ವಾದ್ಯವೃಂದ

ಬ್ೕಂಡ್ ಕೇಂಡ್
ಬ್ೕಂಡ್ ಕೇಂಡ್
ಡುಮ್ ಡುಮ್ ಡುಮ್
ವಾದ್ಯೊನೊರ ಉರಿಪುಲೆ
ಪೀ ಪೀ ಪೀ

ಬ್ೕರ	ವ್ಯಾಪಾರ	ಬ್ೕಂಕ್	ಬ್ಯಾಂಕು

ಬ್	ಬ್	ಬ್	

ಒ

ಒಂಟೆ್

ಒಂಟೆ

ಬಲ ಬಾಲೆ್ ಬಲ
ಒಂಟೆ್ ತೂಕ ಬಲ
ಬೆರಿತ ಮಿತ್ತ್ ಕುಲ್ಲು
ತಿರ್ಗೊಂಡು ಬಲ

ಒಂಜಿ	ಒಂದು	ಒಡ್ಯುಂಗಿಲ	ವಂಕಿ ಉಂಗುರ	ಒಲಿ	ತಾಳೆಗರಿ

ಒ ಒ ಒ

ಓ

ಓಡ

ದೋಣಿ

ಸುದೆಟ್ ಓಡ
ತೇಲೊಂದುಂಡು ಅಹಾ ಅಹಾ
ಬಾನೊಡು ಮೋಡ
ತೆಲ್ತೊಂದುಂಡು ಅಹಾ ಅಹಾ

ಓಡು	ಹೆಂಚು	ಓಂತಿ	ಊಸರವಳ್ಳಿ	ಓಲ್	ಓಲೆ

ಓ ಓ ಓ

ಒಇ

ಒಇಪು

ಎಳೆ

ಒಇಪು ಬಾಲ್ ಒಇಪು
ದಬಕ್ ದಬಾ ಐಸಾ
ಮಣ್ಣ್ ಮಿತ್ತ್ ಬೂರಡ್
ನೀರ್ ಮಿತ್ತ್ ಏರಡ್

ಕೊಇಲ್	ಬೆಳೆ ಕೊಯ್ಯುವಿಕೆ	ನೊಇರ್	ನೊಯಿರ್ ಮೀನು

ಒಇ	ಒಇ	ಒಇ	

ಔ

ಔಲು

ಅಲ್ಲಿ

ಔಲು ತೂಲ ನಾಯಿ
ಜತ್ತ್‌ದ್‌ಂಡ್ ಬಾಯಿ
ಮಲ್ಲ ದೊಂಡ್ ಐತ್ತ
ಬೌ ಬೌ ಬೌ॥ ಬೌ ಬೌ ಬೌ॥

ಔಡು	ತುಟಿ	ಔಷಧ	ಔಷಧಿ

ಔ ಔ ಔ

ಅಂ

ಸಂಸಾರ

ಕುಟುಂಬ

ಅಜ್ಜಿ ಅಜ್ಜೆರ್ ಬಲೆ
ಅಪ್ಪೆ ಅಮ್ಮೆರ್ ಬಲೆ
ಅಕ್ಕ ಬಲಾ ಅಣ್ಣ ಬಲಾ
ಪೊರ್ಲು ಸಂಸಾರ ನಮ್ಮ ಸಂಸಾರ

ಹಂಸ	ಹಂಸ

ಅಂ ಅಂ

ಅಂ ಅಂ ಅಂ

ಅಃ

ಅಂತಃಪುರ

ಅಂತಃಪುರ

ಅಂತಃಪುರಟು್
ಪೊರ್ಲುದ ರಾಣಿ
ರಾಣಿನ ಕೈಟೊಂಜಿ ಗೆಜ್ಜತ್ತಿ

ದುಃಖ	ದುಃಖ	ಪ್ರಾಥಃಕಾಲ	ಮುಂಜಾನೆ

ಅಃ	ಅಃ	ಅಃ	

ಕ

ಕಕ್ಕೆ್

ಕಾಗೆ

ಕಕ್ಕೆ್ ಕಕ್ಕೆ್ ಕಕ್ಕೆ್
ಮರತ್ತ ಮಿತ್ತ್ ಕಕ್ಕೆ್
ಅಕ್ಕೆ್ ಕೈಟ್ ತಡ್ಪೆ್ ತೂದು
ಕಾ ಕಾ ಕಾ

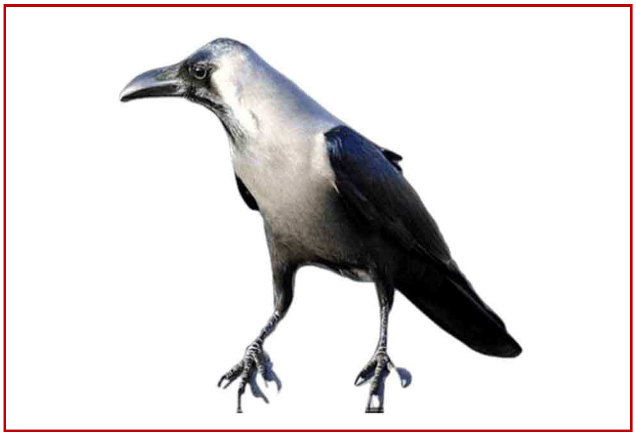

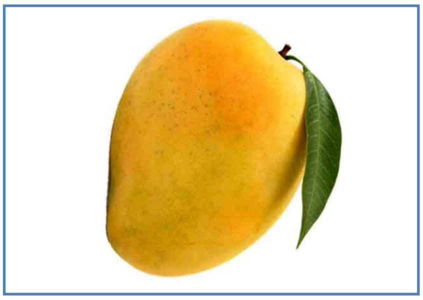

ಕಂಜಿ	ಕರು	ಕಂಬುಲ	ಕಂಬಳ ಕ್ರೀಡೆ	ಕುಕ್ಕು	ಮಾವಿನಹಣ್ಣು

ಕ ಕ ಕ

ಖ

ಖರ್ಜೂರ

ಖರ್ಜೂರ

ಖರ್ಜೂರ ಬೋಡು ಜುಂಬ್‌ರ್
ಬಚ್ಚಿರ್ ಬೋಡು ಅಗ್ಯ್‌ರ್

ಖಡ್ಗ	ಖಡ್ಗ	ಖೊಖೊ	ಖೋಖೋ	ಖಾದ್ಯ	ಸಿಹಿ ತಿನಿಸು

ಖ ಖ ಖ

ಗ

ಗಗ್ಗರ

ಗಗ್ಗರ

ಗಗ್ಗರ ದೀಡ್
ನಲಿಪುಂಡು ಬೂತ
ಕೋಲೊಗು ಪೋಯಿ
ನಮ ಮಾತ

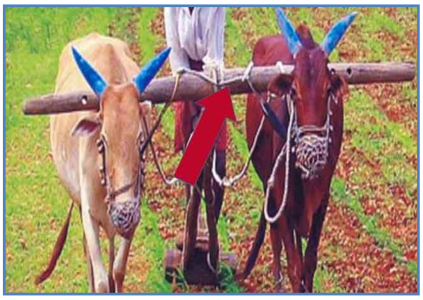

ಗುಜ್ಜ್	ಹಲಸಿನಕಾಯಿ	ಪುಗೆ	ಹೊಗೆ	ನುಗ	ನೊಗ

ಗ	ಗ	ಗ	

ಘ

ಘಟ್ಟ

ಘಟ್ಟ

ಸುತ್ತು ಸುತ್ತು ಬಡ್ತ್‌ದು
ಘಟ್ಟದ ಮಿತ್ತ್ ಬತ್ತ್‌ದ್
ಕಾಡ್ ಗುಡ್ಡೆ ತಿರ್ಗ್‌ರ್
ಏತ್ ಪೊರ್ಲು ತೂಯೆ್‌ರ್

ಘಂಟ್	ಘಂಟೆ	ಘಟ	ಘಟ	ಘಮ	ಘಮಘಮ

ಘ ಘ ಘ

ಞ

ನಞ್ಗ್

ನಂಗುಮೀನು

ನಞ್ಗ್ ಮೀನ್ ನುಞ್ಗಾದ್
ಬಞ್ಗಡ್ ಮೀನ್ ಪಜ್ಜಿಡ್
ಕಮ್ಮೆನದಾ ಕಜಿಪುಡು
ಉನ್ಪ ನಮ ಸಜ್ಜಿಡ್

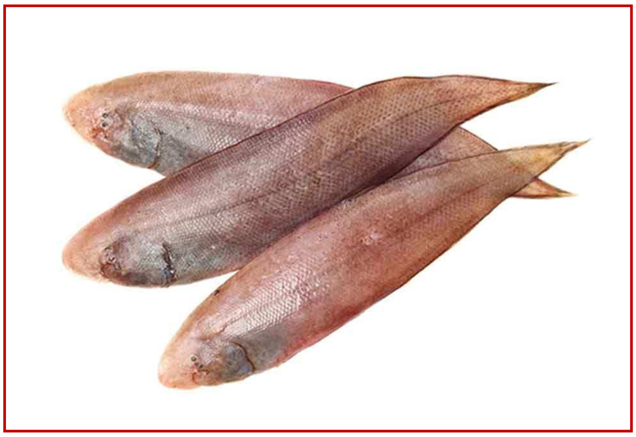

ಗೋಞ್ಕು	ಗೇರುಹಣ್ಣು	ಅಞ್ಗಡಿ	ಅಂಗಡಿ	ಅಞ್ಗಿ	ಅಂಗಿ

ಞ ಞ ಞ

ಚ

ಚನಿಲ್

ಅಳಿಲು

ಅಂಚೇಂದ್‌ಂಡ್ ಚನಿಲ್
ಇಂಚೇಂದ್‌ಂಡ್
ಮಿತ್ತ್ ಪೋಂಡು ಮಿತ್ತ್
ಪೋಂಡು
ಡಮ್ಮ ಬೂರ್‌ಂಡ್

ಚಿತ್ತ್‌ಪುಲಿ	ಕಿತ್ತಳೆಹಣ್ಣು	ಬಚ್ಚಿರ್	ವೀಳ್ಯದೆಲೆ	ಪುಚ್ಚೆ	ಬೆಕ್ಕು

ಚ ಚ ಚ

ಛ

ಛರ್ಬಿ

ಕೊಬ್ಬು

ಪಂಜಿದ ಕುರ್ಲೆಗ್
ಬಾರೀ ಛರ್ಬಿ
ಗುರ್ಬಿದ ಕಿನ್ನಿಗ್
ಛರ್ಬಿಯೆ ಇಜ್ಜಿ

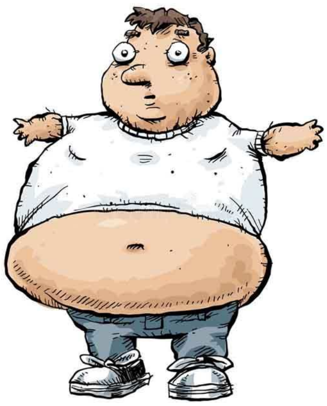

ಛಡಿ	ಛಡಿ	ಛತ್ರ	ಛತ್ರ

ಛ	ಛ	ಛ	

ಜ

ಜಕ್ಕೆಲ್

ಮಡಿಲು

ಇಲ್ಲಡ್ ತುಳುವ ಜೋಕುಲು
ಕೆದುಟ್ಟ್ ಪೊರ್ಲುದ ಪೂಕುಲು

ಜೋಕುಲು	ಮಕ್ಕಳು	ಬಜಿಲ್	ಅವಲಕ್ಕಿ	ಗೋಳಿಬಜ್	ಗೋಳಿಬಜೆ ತಿಂಡಿ

ಜ ಜ ಜ

ಝ

ಝರಿ

ಝರಿ

ಪ್ರೊತ ಬಿತ್ತ್‌ಲ್‌ಡ್
ಪ್ರೊಕುಲು ಬಗ್‌ಬಗ್
ಝೀನಿಯ ಸುಗಂಧಿ
ಬಯ್ಯೊದ ಮಲ್ಲಿಗೆ

ಝೀನಿಯ	ಝೀನಿಯ	ರಝಾಯಿ	ರಝಾಯಿ

ಝ	ಝ	ಝ	

ಞ

ಞಕ್ಕುರು

ಎರೆಹುಳು

ಞಕ್ಕುರು ಞಕ್ಕುರು
ಮಣ್ಣ್ ತಿಂದ್ಂಡ್
ಕುಪ್ಪಲು ಮಣ್ಣ್‌ಡ್
ಬುಲ್ ಎಚ್ಚಾಂಡ್

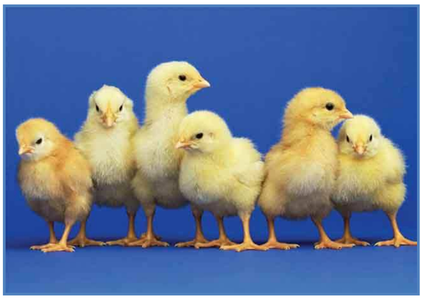

ಞೋಲಿಸರ	ಲೋಳೆಸರ	ಕಞ್ಚಲ	ಹಾಗಲಕಾಯಿ	ಕುಞ್ಞಿ	ಕೋಳಿಮರಿ

ಞ ಞ ಞ

ಟ

ಟಪಾಲ್

ಅಂಚೆ

ಟೊಪ್ಪಿ ಬೋಡಾ ಟೊಪ್ಪಿ
ಬಾಲೆಗೊಂಜಿ ಟೊಪ್ಪಿ
ಬಾಲೆ್ದಾ ಕೈಟುಂಡು
ಪೇರ್‌ದಾ ಕುಪ್ಪಿ

ಟೊಪ್ಪಿ	ಟೋಪಿ	ಲಾಟಾನ್	ಲಾಟೀನು	ಪಟ್ಟ್	ಜೇನುಗೂಡು

ಟ ಟ ಟ

ಠ

ಪೀಠ

ಪೀಠ

ಬಾನದ ನಡುಟು
ಮೂಡ್ಯೆ ಪೀಠ
ಮಿತ್ತ್‌ಡ್ ಸೂರ್ಯನ
ಒಲೆಗದಾಟ

ಮಠ	ಮಠ

ಠ ಠ

ಠ ಠ ಠ

ಡ

ಡಬ್ಬಿ

ಪೆಟ್ಟಿಗೆ

ಅಟ್ಟಿಲ್‌ದ ಅದೆಟ್ ಡಬ್ಬಿ
ಡಬ್ಬಿಡುಂಡು ಚಕ್ಕುಲಿ
ಜೋಕುಲೆಗ್ ಎಕ್ಕಂದ್
ತೂಪೆರಕುಲು ಪಿಳಿಪಿಳಿ

ಡೆಂಜಿ	ಏಡಿ	ಕಡೆಪಿಕಲ್ಲ್	ರುಬ್ಬುಕಲ್ಲು	ಗಿಡಿ	ಹದ್ದು

ಡ ಡ ಡ

ಢ

ಢಕ್ಕೆ

ಢಕ್ಕೆ

ಪಾರ್ ಬರಡ ಬಾಲ್
ಎದುರುಡುಂಡು ಗೋಡ್
ತೂವೊಂದು ಬಲ ಬಾಲ್
ಆವಡಾ ಢಿಕ್ಕಿ

ಢಿಕ್ಕಿ	ಡಿಕ್ಕಿಹೊಡೆ	ಢಾಲ್	ಗುರಾಣಿ

ಢ ಢ ಢ

ಣ

ಪಣವು

ಹಣ

ಇಲ್ಲ್‌ದ ಪೊರ್ತುಡು
ಬಾಲ್‌ದ ಮೋನ್
ಪುಣ್ಣಮ್ ಚಂದ್ರೆನೆ
ಬೈದೆನ ದಾನ್

ಮಣ್ಣ್	ಮಣ್ಣು	ಪುಣ್ಣಮ್	ಹುಣ್ಣಿಮೆ	ಪೊಣ್ಣ್	ಹೆಣ್ಣು

ಣ ಣ ಣ

ತ

ತಲೆಂಬು

ತಲೆದಿಂಬು

ಬಂದ ತೆಲ್ಬುಡು
ಮೈತ್ಂಡ ತೆಲ್ಲವು
ತಿಂಡ ತೆಲಿಕೆಡ್
ಬದ್ಕ್ ಪೊರ್ಲಾವು

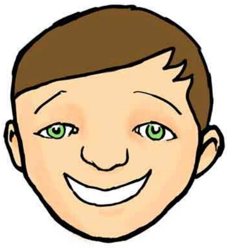

ತಾರಾಯಿ	ತೆಂಗಿನಕಾಯಿ	ತೆಲಿಕೆ	ನಗು	ತೆಲ್ಲವು	ದೋಸೆ

ತ ತ ತ

ಥ

ಥಳಗ್

ಥಳಥಳಿಸು

ಅಜ್ಜಿನ ಥೈಲಿ
ಪಣವುದ ಗಂಟ್
ಏರೆಗ್ಲ ತಿಕ್ಕಂದ್
ಪನ್ಪಿನ ನಿಗಂಟ್

ಥಾನ್	ಥಾನು	ಥೈಲಿ	ಕೈಚೀಲ	ರಥ	ರಥ

ಥ	ಥ	ಥ	

ದ

ದಪ್ಪು

ಉಳು

ಬೋಡುಗ್ ಅಜ್ಜಿಗ್
ಬದನ್‌ದ ಬಜ್ಜಿ
ಬೋಡು ಬಾಯಿಗ್
ತೊಂದರ್ ಇಜ್ಜಿ

ದಾಡ್	ದಂತ	ಬದನ್	ಬದನೆಕಾಯಿ	ತುದ್	ನದಿ

ದ ದ ದ

ಧ

ಧ್ವಜ

ಧ್ವಜ

ಕೇಸರಿ ಬೊಲ್ದು ಪಚ್ಚ್‌ಲ
ಅಶೋಕ ಚಕ್ರ ನಡುಟು
ನಮ್ಮ ಧ್ವಜ ನಿಚ್ಚಲ
ಎತ್ತರೊದ ಕೊಡಿಟ್

ಧನಸ್ಸ್	ಧನುಸ್ಸು	ಗಂಧಪುರ್ಸಾದ	ಗಂಧಪ್ರಸಾದ	ಸುಗಂಧಿ	ಸುಗಂಧಿ ಹೂ

ಧ ಧ ಧ

ನ

ನಲಿಕೆ್

ಕುಣಿತ

ಕಣ್ಣ್ ರಡ್ಡ್ ಕೆಬಿ ರಡ್ಡ್
ನರಮಾನಿ ನಾಲಾಯಿ ಒಂಜೆ

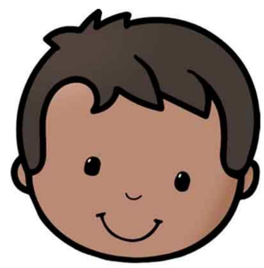

ನಾಲಯಿ	ನಾಲಿಗೆ	ಕನಕ್	ಸೌದೆ	ಮೋನೆ್	ಮುಖ

ನ ನ ನ

ಪ

ಪಂತಿ

ಹುಲ್ಲು

ಪಂತಿ ಡೊಂಜಿ ಪಾಂತ್‌ಗ್
ಶೂ ಶೂ ಶೂ
ಪಂತಿ ಕೊಡಿಟ್ ಕಮ್ಮೈನದ
ಪೂ ಪೂ ಪೂ

ಪಾಂತ್	ಚಿಟ್ಟೆ	ಪೂ	ಹೂ	ಅರಿಪ್	ಸೋಸುಗ

ಪ ಪ ಪ

ಫ

ಫಲವಸ್ತು

ಹಣ್ಣುಗಳು

ಫಲವಸ್ತು ಕನಲೆಗ್
ಕುಸಿಕುಸಿಟ್ ತಿನ್ಕಗ್

ಫಸಲ್	ಫಸಲು

ಫ ಫ

ಫ ಫ ಫ

ಬ

ಬಲ್ಲ್

ಹಗ್ಗ

ಬಲ್ಲ್ ಅವು ಬಾರ್‌ದ
ಮಲ್ಲಿಗ್‌ಲಾ ಬೂರುದ
ಎಲ್ಲಿ ಮಲ್ಲ್ ಸೇರ್‌ಗ
ಮಲ್ಲ ಮಾಲ್ ಕಟ್ಟ್‌ಗ

ಬಾರ್	ಬಾಳೆ	ತಬುರು	ಕೆಂಪಿರುವೆ	ಕಲೆಂಬಿ	ಮರದದೊಡ್ಡ ಪೆಟ್ಟಿಗೆ

ಬ ಬ ಬ

ಭ

ಭೃಂಗ

ದುಂಬಿ

ಭರಣಿಡುಂಡು ಉಪ್ಪಡ್
ಉಪ್ಪಡ್‌ನೊರ ನಕ್ಕ್‌ಗಾ
ಬಾಯಿ ಮಾತಾ ಪುಳಿಪುಳಿ
ಒಣಸ್ ಮಾತ್ರ ರುಚಿರುಚಿ

ಭಾರತ	ಭಾರತ	ಭರಣಿ	ಭರಣಿ	ಭೂಮಿ	ಭೂಮಿ

ಭ ಭ ಭ

ಮ

ಮಂಗೆ

ಮಂಗ

ಮಂಗನೊಂಜಿ ಕಿನ್ನಿಗ್
ಪಿಳಿ ಪಿಳಿ ತೂಪುಂಡು
ಪಿಳಿ ಪಿಳಿ ತೂವೊಂದು
ಕುತ್ತ ಕುತ್ತ ಲಾಗ್ಯುಂಡು

ಮೀನ್	ಮೀನು	ತಿಮರ್	ಒಂದೆಲಗ	ಮದಿಮೆ	ಮದುವೆ

ಮ ಮ ಮ

ಯ

ಯಂತ್ರ

ಯಂತ್ರ

ಅಜ್ಜೆರ್ ಕನತೆರ್
ಬಚ್ಚಂಗಾಯಿ
ಕಾಯತ್ತ್ ಪರ್ಂದ್
ಕೆಂಪುಂಡು ಉಲಯಿ

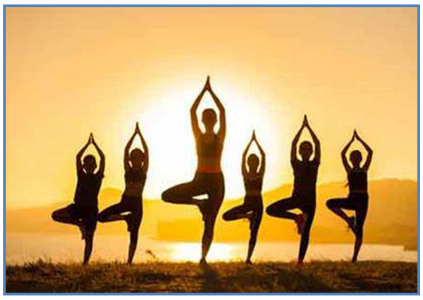

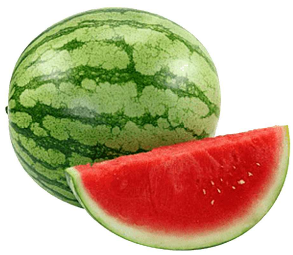

ಯೋಗ	ಯೋಗ	ಸೀಯನ	ಪಾಯಸ	ಬಚ್ಚಂಗಾಯಿ	ಕಲ್ಲಂಗಡಿ ಹಣ್ಣು

ಯ ಯ ಯ

ರ

ರಕ್ಕಸ್

ರಾಕ್ಷಸ

ಆಟೊಡು ತೂಯೆ್ ರಕ್ಕಸನ್
ರಕ್ಕಸೆ ದೀಯೆ ಅರಬಾಯಿ
ಜೋಕುಲು ತೂಯ ಬೆಕ್ಕಸ್‌ದ್
ದೆತ್ತ್‌ದು ಬಾಯಿ ಬೊಂಬಾಯಿ

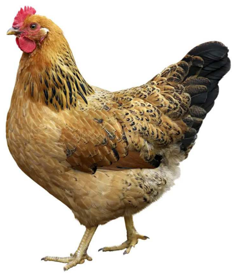

ರೆಂಕ್	ರೆಕ್ಕೆ	ಅರಸು	ಅರಸ	ಕೋರಿ	ಕೋಳಿ

ರ ರ ರ

ಲ

ಲತ್ತಸ್

ಅಲಸಂದೆ

ಡಂಗಟಕ್ಕ ಡಂಗಟಕ್ಕ
ಬತ್ತ್‌ಂಡೇ ಪಿಲಿ ಪಿಲಿ
ಎಲ್ಯ ಮಲ್ಲ ಜೋಕ್ಲು ಬತ್ತ
ಮಲ್ತ ತೂಲೆ ಪಿಳಿಪಿಳಿ

ಲೋಟ್	ಲೋಟ	ಕಲಸ್	ಧಾನ್ಯದ ಅಳತೆಯ ಒಂದು ಸಾಧನ	ಪಿಲಿ	ಹುಲಿ

ಲ ಲ ಲ

ವ

ವಕೀಲೆ

ವಕೀಲ

ಒಂಜಿ ಸೇರ್ ನಾಲ್ ಪಾವು
ಲೆಕ್ಕೊನೊಂಜಿ ಕಲ್ಬುಲ್
ಬೆಂತಿ ಬಾರ್ ನಾಲ್ ಪಾಲ್
ತುಪ್ಪೆನೊಂಜಿ ಕಟ್ಟ್‌ಲೆ

ವಾದ್ಯ	ವಾದ್ಯ	ಗುವ್ವೆಲ್	ಬಾವಿ	ಪಾವು	ಪಾವು

ವ ವ ವ

ಶ

ಶಂಖ

ಶಂಖ

ಶಾಲೆಡಿನಿ ಪರ್ಬಗ್
ಕಲಶ ಪತ್ತ್‌ದ್ ಪಿದಡ್‌ಗ
ಬಾಲೆಗಿನಿ ಬೇಲೆ್ಗೆ
ಬಲಗ್ ಶಂಖ ಉರ್ಪುಗ

ಶಾಲೆ್	ಶಾಲೆ	ಶಶಾಂಕ	ಚಂದ್ರ	ಕಲಶ	ಕಳಸ

ಶ ಶ ಶ

ಷ

ಷಟ್ಕೋನ

ಷಟ್ಕೋನ

ಕಷಾಯ ಕೈಪ್ ಕೈಪ್
ಬೆಲ್ಲಲ ಪಾಡ್ದ್ ಪರ್ಕ
ಕಂಚಲ ಬೊಕ್ಕಲ ಕೈಪ್
ಕಜಿಪುಲ ಮಲ್ತ್ದ್ ತಿನ್ಕ

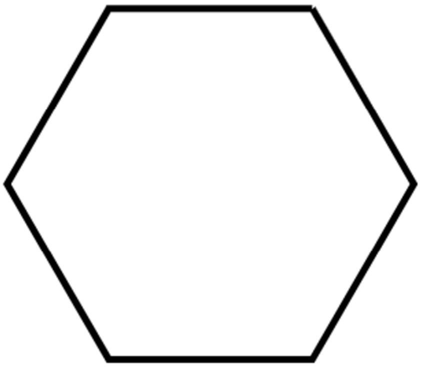

ಕ್ಷತ್ರಿಯ	ಕ್ಷತ್ರಿಯ	ಕಷಾಯ	ಕಷಾಯ	ಪುರುಷ	ಪುರುಷ

ಷ ಷ ಷ

ಸ

ಸಮ್ಟು

ಚಮಚ

ಬಿಸಲ್‌ದೊಲಯಿ ಬಸಲ್
ಸಟ್ಟ್‌ಗ ಪಾಡ್ದ್ ಬಲಸ್‌ಲೆ
ಕುಸಿಕುಸಿಟ್ ಒಣಸ್ ಉಂಡ್ದು
ಕತ್ ಸರತ ಕೇನ್‌ಲೆ

ಸರ	ಸರ	ಬಿಸಲ್	ಮಣ್ಣಿನ ಪಾತ್ರೆ	ಒಣಸ್	ಊಟ

ಸ ಸ ಸ

ಹ

ಹರಿವಾಣ

ಹರಿವಾಣ

ಹಾ ಹಾ ಹರಿವಾಣ ತೂಲೆ
ಬಚ್ಚಿರ್ ಪೂಲು ಸುಣ್ಣ
ಹೂ ಹೂ ಅಗ್ಯಿದ್ ತಿನ್ಲೆ
ಬಾಯಿ ನಿಲಿಕ್ ಬಣ್ಣ

ಹಾಸಿಗ್	ಹಾಸಿಗೆ	ಹೋಳಿಗ್	ಹೋಳಿಗೆ	ಬಹುಮಾನ	ಬಹುಮಾನ

ಹ ಹ ಹ

ಳ

ಏಳ್

ಏಳು

ಗಿಳಿಕುಲು ಏಳ್ ರಾವೊಂದು ಬತ್ತ
ಆಸೆಡ್ ನೇರೊಳು ಮರತಡೆ ಎತ್ಯ
ನೇರೊಳು ತಿಂದ
ಗುಳುಮ್ ಗುಳುಮ್ ಗುಳುಮ್

ಗಿಳಿ	ಗಿಳಿ	ಗುಳ್ಳ	ಗುಂಡು ಬದನೆಕಾಯಿ	ನೇರೊಳು	ನೇರಳೆ ಹಣ್ಣು

ಳ ಳ ಳ

ಗೆನ್ಪು			
೧	ಒಂಜಿ		1
೨	ರಡ್ಡ್	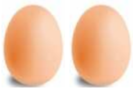	2
೩	ಮೂಜಿ	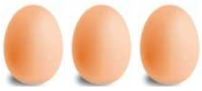	3
೪	ನಾಲ್	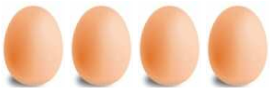	4
೫	ಐನ್	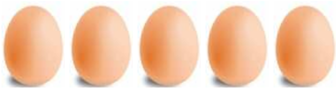	5
೬	ಆಜಿ	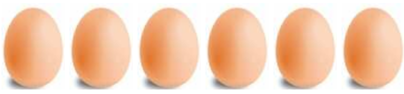	6
೭	ಏಳ್	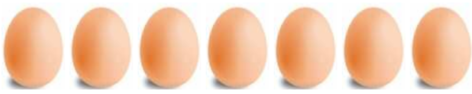	7
೮	ಎನ್ಮ	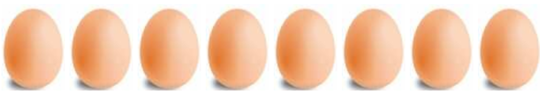	8
೯	ಒರ್ಂಬ	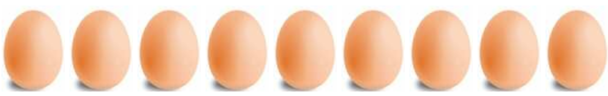	9
೧೦	ಪತ್ತ್	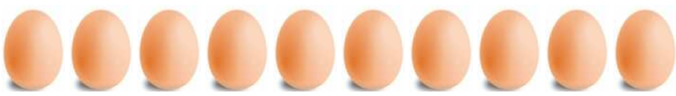	10

೧೧	ಪತ್ತೊಂಜಿ	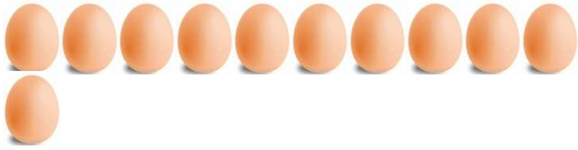	11
೧೨	ಪದ್ರಾಡ್	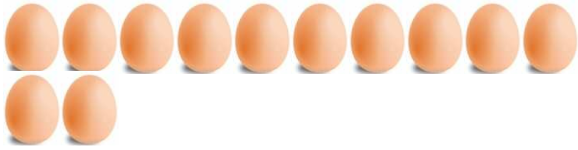	12
೧೩	ಪದಿಮೂಜಿ	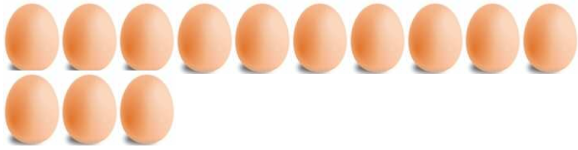	13
೧೪	ಪದಿನಾಲ್	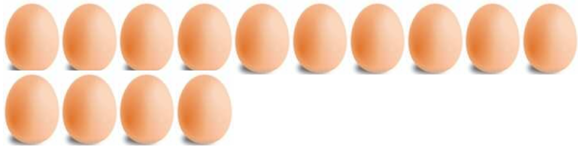	14
೧೫	ಪದಿನೆಇನ್	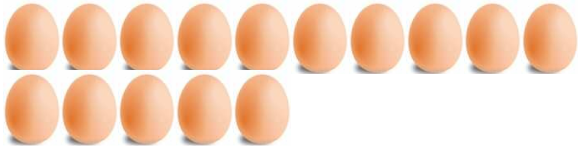	15
೧೬	ಪದಿನಾಜಿ	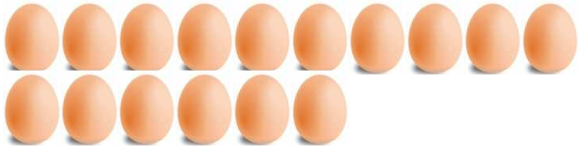	16
೧೭	ಪದಿನೇಳ್	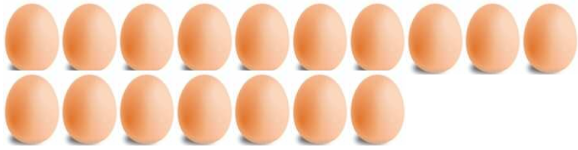	17
೧೮	ಪದಿನೆನ್ಮ	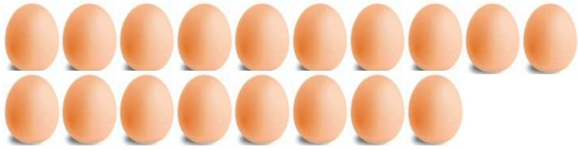	18
೧೯	ಪದ್ನೊರ್ಂಬ	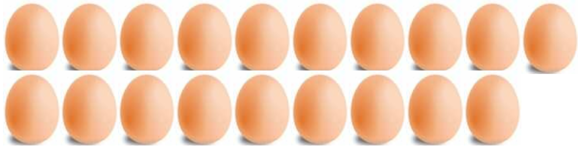	19
೨೦	ಇರ್ವ	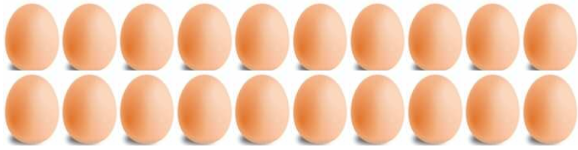	20

೧	೧	೧	೧	
೨	೨	೨	೨	
೩	೩	೩	೩	
೪	೪	೪	೪	
೫	೫	೫	೫	
೬	೬	೬	೬	
೭	೭	೭	೭	
೮	೮	೮	೮	
೯	೯	೯	೯	
೧೦	೧೦	೧೦	೧೦	

೧೧	೧೧	೧೧	೧೧	
೧೨	೧೨	೧೨	೧೨	
೧೩	೧೩	೧೩	೧೩	
೧೪	೧೪	೧೪	೧೪	
೧೫	೧೫	೧೫	೧೫	
೧೬	೧೬	೧೬	೧೬	
೧೭	೧೭	೧೭	೧೭	
೧೮	೧೮	೧೮	೧೮	
೧೯	೧೯	೧೯	೧೯	
೨೦	೨೦	೨೦	೨೦	

ಕನ್ನಡವರ್ಣಮಾಲೆ

ಸ್ವರಾಕ್ಷರಗಳು

ಅ	ಆ	ಇ	ಈ	ಉ	ಊ	ಋ	ಎ
ಏ	ಐ	ಒ	ಓ	ಔ	ಅಂ	ಅಃ	

ವ್ಯಂಜನಾಕ್ಷರಗಳು

ಕ	ಖ	ಗ	ಘ	ಙ
ಚ	ಛ	ಜ	ಝ	ಞ
ಟ	ಠ	ಡ	ಢ	ಣ
ತ	ಥ	ದ	ಧ	ನ
ಪ	ಫ	ಬ	ಭ	ಮ
ಯ	ರ	ಲ	ವ	ಶ
ಷ	ಸ	ಹ	ಳ	

ePathshala

Step-by-Step guide for users to access e-resources linked to QR Codes

The coded box placed on the first page of every chapter is called quick Response (QR) Code. It will help you to access e-resources such as audios, videos, multi-media, texts, etc. related to themes given in the chapter. The first QR code is to access the complete e-textbook. The subsequent QR codes will help you access the relevant e-resources linked to each chapter. This will help you enhance your learning in a joyful manner.

Follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using ePathshala

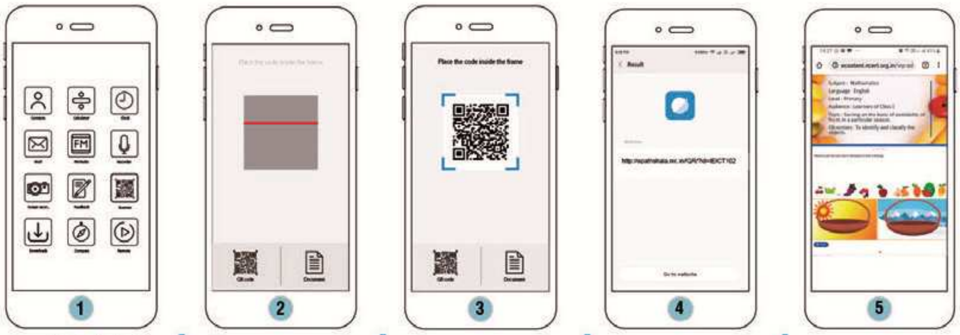

1. Install ePathshala Scanner app from Play Store and open
2. Get ready with QR code scanning window
3. Place scanner above the QR code
4. Select and click on the link
5. Use available e-Resource

For accessing the e-Resources using e-Pathshala on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://epathshala.nic.in/topics.php and enter the alphanumeric code given below the QR code

DIKSHA

Download **DIKSHA** app from Google Playstore and follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using **DIKSHA**

1. Select preferred language
2. Choose your role: Student or Teacher
3. Grant access and allow app permissions
4. Tap to scan the QR code
5. Focus camera on the QR code in textbook
6. Click to Play QR code specific e-resource(s)

For accessing the e-Resources using DIKSHA on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://diksha.gov.in/resources and enter the alphanumeric code given under the QR code

PREPARATION OF BILINGUAL PRIMERS (EARLY GRADE) FOR BHARATIYA LANGUAGES JOINTLY BY CIIL & NCERT (Phase-1)

SCHEDULED LANGUAGES

Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages
1	ASSAMESE	9	KONKANI	17	SANSKRIT
2	BENGALI	10	MAITHILI	18	SANTALI
3	BODO	11	MALAYALAM	19	SINDHI
4	DOGRI	12	MANIPURI	20	TAMIL
5	GUJARATI	13	MARATHI	21	TELUGU
6	HINDI	14	NEPALI	22	URDU
7	KANNADA	15	ODIA		
8	KASHMIRI	16	PUNJABI		

NON - SCHEDULED LANGUAGES

Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages
1	ADI	20	KINNAURI	39	MISING
2	ANAL	21	KISAN (KUNHU)	40	MIZO
3	ANGAMI	22	KODAVA	41	MOGH
4	AO	23	KOKBOROK	42	MUNDARI
5	BHILI (VASAVA)	24	KOLAMI	43	NYISHI (NISSI)
6	BHUTIA	25	KONDA	44	RABHA
7	BISHNUPRIYA MANIPURI	26	KORKU	45	RAI
8	DEORI	27	KORWA	46	SHERPA
9	DIMASA	28	KOYA	47	SAVARA (SORA)
10	GADABA (GUTOB)	29	KUI	48	SÜMI (SEMA)
11	GARO	30	KUKI	49	TAMANG
12	HALBI	31	KURUKH	50	TANGKHUL
13	HMAR	32	KUZHALE (KHEZHA)	51	TANGSA
14	JATAPU (KUVI)	33	LEPCHA	52	TIWA (LALUNG)
15	JUANG	34	LIANGMAI	53	TULU
16	KABUI	35	LIMBU	54	WANCHO
17	KARBI	36	LOTHA		
18	KHANDESHI	37	MAO		
19	KHARIA	38	MISHMI (IDU)		

भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
0821 2515820 (Director) / ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
011 2696 2580 / dceta.ncert@nic.in